



परमेश्वर के साथ सहभागिता

उसकी उपस्थिति का पीछा करना संदेश श्रृंखला (भाग 5)

रविवार का संदेश

संदेश नोट्स, संदेश रूपरेखा और छोटे समूह अध्ययन मार्गदर्शिका

परमेश्वर के साथ सहभागिता

उसकी उपस्थिति का पीछा करना (भाग 5)

रविवार का संदेश, 14 जून 2026 - संदेश रूपरेखा

परमेश्वर के साथ सहभागिता

उसकी उपस्थिति की खोज में हमने कई आत्मिक अभ्यासों पर विचार किया है: स्थिरता, मनन, व्यक्तिगत आराधना और व्यक्तिगत निजी प्रार्थना।

हमारे पास जो सबसे अद्भुत और महान विशेषाधिकार है, उनमें से एक है परमेश्वर के साथ सहभागिता करना। उसकी उपस्थिति की खोज में हम इसी स्थान पर निवास करना चाहते हैं। परमेश्वर के साथ सहभागिता करने का क्या अर्थ है, और हम उसके साथ निरंतर, अटूट, गहरी, घनिष्ठ, अर्थपूर्ण और उद्देश्यपूर्ण सहभागिता में कैसे बने रह सकते हैं?

परमेश्वर के साथ सहभागिता

1 कुरिन्थियों 1:9

“परमेश्वर विश्वासयोग्य है, जिसके द्वारा तुम उसके पुत्र हमारे प्रभु यीशु मसीह की सहभागिता में बुलाए गए हो।”

2 कुरिन्थियों 13:14

“प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह, परमेश्वर का प्रेम, और पवित्र आत्मा की सहभागिता तुम सबके साथ होती रहे। आमीन।”

1 यूहन्ना 1:1-4

यूहन्ना बताता है कि हमारी सहभागिता पिता और उसके पुत्र यीशु मसीह के साथ है, और यही हमारी परिपूर्ण आनन्द का स्रोत है।

सहभागिता (फेलोशिप), संगति (कम्यूनिशन) के लिए यूनानी शब्द “कोइनोनिया” (Koinōnia) प्रयोग किया गया है, जिसका अर्थ है साझा करना, घनिष्ठता और साझेदारी।



परमेश्वर के साथ सहभागिता

उसकी उपस्थिति का पीछा करना संदेश श्रृंखला (भाग 5)

रविवार का संदेश

संदेश नोट्स, संदेश रूपरेखा और छोटे समूह अध्ययन मार्गदर्शिका

यूनानी भाषा में “कोइनोनिया” नया नियम का एक अत्यंत समृद्ध और महत्वपूर्ण शब्द है। इसका अनुवाद सहभागिता, संगति, भागीदारी, साझेदारी, निकटता या योगदान के रूप में किया जाता है, लेकिन इनमें से कोई भी शब्द इसकी पूरी गहराई को व्यक्त नहीं कर पाता।

बाइबल के समय यूनानी संस्कृति में यह शब्द गहरी मित्रता, वैवाहिक संबंध, व्यापारिक साझेदारी, साझा संपत्ति और सामाजिक जीवन में भागीदारी के लिए प्रयोग किया जाता था। नया नियम इस सामान्य शब्द को गहरे आत्मिक अर्थ से भर देता है।

कोइनोनिया का शाब्दिक अर्थ है—जो सामान्य, साझा और सबका है। इसका मूल विचार है किसी बात में साझेदारी करना और उसमें सक्रिय रूप से भाग लेना। कोइनोनिया केवल साथ रहने का नाम नहीं है; यह साझा जीवन, उद्देश्य, संपत्ति, संबंध और अनुभव में सहभागिता है।

बाइबिलीय कोइनोनिया का अर्थ है जीवन, पहचान, मिशन, संसाधनों, आनन्द और दुःख में सहभागिता करना और उन्हें साझा करना। यह संबंधपरक, आत्मिक, व्यावहारिक और वाचागत (covenantal) है।

हमें पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा—अर्थात् परमेश्वरत्व—के साथ कोइनोनिया रखने के लिए बुलाया गया है। नया नियम यह नहीं कहता कि हम केवल परमेश्वर को जानते हैं; यह कहता है कि हम परमेश्वर के साथ कोइनोनिया रखते हैं।

इसका अर्थ है घनिष्ठ संबंध, साझा जीवन और दिव्य सहभागिता। हमें परमेश्वर के साथ जीवन, पहचान, उद्देश्य, संसाधनों, आनन्द और दुःख में सहभागी होने के लिए आमंत्रित किया गया है। विश्वासी को उस संबंध में लाया जाता है जो पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के बीच विद्यमान है।

कोइनोनिया में घनिष्ठता (निकटता, व्यक्तिगत पहचान, स्नेह) और साझेदारी (भागीदारी, प्रतिबद्धता, उत्तरदायित्व, उद्देश्य) दोनों सम्मिलित हैं।

कोइनोनिया का विशेषाधिकार घनिष्ठता है।

कोइनोनिया की जिम्मेदारी साझेदारी है।

विशेष टिप्पणी

परमेश्वर के साथ कोइनोनिया ही एक-दूसरे के साथ सच्ची कोइनोनिया का आधार है। मसीह में हमारी एकता हमें परमेश्वर के जीवन में सहभागी बनाती है और उसी से हमारे बीच साझा जीवन उत्पन्न होता है। नया नियम कोइनोनिया को ऊर्ध्वाधर (परमेश्वर के साथ) और क्षैतिज (एक-दूसरे के साथ) दोनों रूपों में प्रस्तुत करता है।



परमेश्वर के साथ सहभागिता

उसकी उपस्थिति का पीछा करना संदेश श्रृंखला (भाग 5)

रविवार का संदेश

संदेश नोट्स, संदेश रूपरेखा और छोटे समूह अध्ययन मार्गदर्शिका

हमारे बीच की सहभागिता इसलिए संभव है क्योंकि पहले हमारी सहभागिता पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के साथ है।

जब हम परमेश्वर के साथ सहभागिता करते हैं, तब हम उसके हृदय को जानते हैं

यूहन्ना 5:19-20

प्रभु यीशु ने पृथ्वी पर रहते हुए पिता और पवित्र आत्मा के साथ घनिष्ठ सहभागिता में जीवन बिताया। वह आत्मा के द्वारा संचालित थे और पिता की गोद में निवास करते थे। इसलिए उन्होंने कहा कि जो कुछ वे कहते और करते हैं, वह सब पिता से प्राप्त करते हैं।

सहभागिता प्रकाशन का स्थान है। यही वह स्थान है जहाँ पिता अपना हृदय प्रकट करता है, हमें दिखाता है कि क्या करना है और वे बड़े कार्य जो उसने हमारे लिए निर्धारित किए हैं।

जब हम परमेश्वर के साथ सहभागिता करते हैं, तब हम उसके साथ साझेदारी करते हैं

यही “उसकी इच्छा पूरी करने” का वास्तविक अर्थ है। जैसे-जैसे हम उसके साथ घनिष्ठता में चलते हैं, हम उसके हृदय को प्रसन्न करना चाहते हैं। हम उसकी जिम्मेदारियों को ग्रहण करते हैं, उसके कार्यों में प्रवेश करते हैं और उसके राज्य की उन्नति के लिए उसके सहकर्मी बनते हैं।

यूहन्ना 4:34

“मेरा भोजन यह है कि मैं अपने भेजने वाले की इच्छा पर चलूँ और उसका काम पूरा करूँ।”

यूहन्ना 8:29

“मैं सदा वही करता हूँ जो उसे प्रसन्न करता है।”

उसके शरीर और उसके लहू में सहभागिता

1 कुरिन्थियों 10:16

“जिस आशीष के कटोरे पर हम धन्यवाद करते हैं, क्या वह मसीह के लहू की सहभागिता नहीं? और जो रोटी हम तोड़ते हैं, क्या वह मसीह की देह की सहभागिता नहीं?”



परमेश्वर के साथ सहभागिता

उसकी उपस्थिति का पीछा करना संदेश श्रृंखला (भाग 5)

रविवार का संदेश

संदेश नोट्स, संदेश रूपरेखा और छोटे समूह अध्ययन मार्गदर्शिका

यहाँ “सहभागिता” शब्द कोइनोनिया है। इसका अर्थ केवल स्मरण नहीं, बल्कि स्वयं मसीह के साथ जीवित सहभागिता और एकता है। यह उसके जीवन, मृत्यु और पुनरुत्थान में हमारी सहभागिता है। हम अपना जीवन उसके क्रूस पर पूर्ण किए गए कार्य के आधार पर जीते हैं।

हमारी सहभागिता उसके शरीर और लहू के आधार पर है।
मसीह हमारा जीवन और हमारा पोषण है।
उसी सहभागिता के कारण हम मसीह की देह के अन्य सदस्यों के साथ भी सहभागिता रखते हैं।
परमेश्वर के साथ अपनी सहभागिता को कैसे बनाए रखें
क. ज्योति में चलें

1 यूहन्ना 1:5-10

यदि हम कहते हैं कि हमारी सहभागिता परमेश्वर के साथ है, लेकिन अंधकार में चलते हैं, तो हम सत्य का पालन नहीं करते। परमेश्वर ज्योति है, इसलिए हमें भी ज्योति में चलना चाहिए।

यदि पाप हो जाए, तो मसीह का लहू हमें शुद्ध करता है ताकि हमारी सहभागिता बनी रहे। लेकिन यदि हम अपने पाप को स्वीकार नहीं करते, तो हमारी सहभागिता की जीवंतता प्रभावित होती है।

उसकी उपस्थिति की खोज में निरंतर सहभागिता बनाए रखने के लिए हमें ज्योति में चलना होगा।

ख. प्रेम में चलें

1 यूहन्ना 2:9-11

जो अपने भाई से बैर रखता है, वह अंधकार में है। परमेश्वर प्रेम है। जैसे ज्योति और अंधकार की सहभागिता नहीं हो सकती, वैसे ही प्रेम और बैर की भी सहभागिता नहीं हो सकती। किसी भाई के प्रति बैर रखना परमेश्वर के साथ हमारी सहभागिता में बाधा उत्पन्न करता है।

ग. शुद्ध विवेक के साथ चलें

1 यूहन्ना 3:20-21



परमेश्वर के साथ सहभागिता

उसकी उपस्थिति का पीछा करना संदेश श्रृंखला (भाग 5)

रविवार का संदेश

संदेश नोट्स, संदेश रूपरेखा और छोटे समूह अध्ययन मार्गदर्शिका

जब हमारा हृदय हमें दोषी नहीं ठहराता, तब परमेश्वर के सामने हमारा साहस बना रहता है। विवेक हमारे हृदय और आत्मा की आवाज़ है। जब वह शुद्ध होता है, तब हम परमेश्वर के साथ स्वतंत्र रूप से सहभागिता कर सकते हैं।

जब आपका विवेक आपको किसी गलत बात के विषय में चेतावनी दे, तो उसकी सुनें और उसका पालन करें। प्रेरित पौलुस ने कहा कि वह परमेश्वर और मनुष्यों के सामने सदैव अच्छा विवेक बनाए रखने का प्रयास करता था।

इसे प्रतिदिन जीवन में उतारना

पिता, प्रभु यीशु मसीह और पवित्र आत्मा के साथ सहभागिता (घनिष्ठता और साझेदारी) में चलना सीखें। निरंतर घनिष्ठता और निरंतर साझेदारी में जीवन बिताएँ। पिता, प्रभु यीशु और पवित्र आत्मा से बात करें। अपने हृदय की बातें स्वतंत्रता से साझा करें। परमेश्वर जो कहता है उसे सुनें। घनिष्ठता और साझेदारी में निरंतर बढ़ते जाएँ।